

ई.एच.आई.-02

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2023 और जनवरी 2024 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-02

पाठ्यक्रम शीर्षक : भारत : प्राचीनकाल से आठवीं शताब्दी ईसवी तक



इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

सत्रीय कार्य
2023-2024

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी.
पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-02

प्रिय विद्यार्थी,

जैसा कि आपको बी.डी.पी. की कार्यक्रम दर्शिका में बताया गया है आपको इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए एक अध्यापक जांच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) करना होगा।

सत्र	जमा करने की तिथि	कहां जमा करना है
जुलाई 2023 सत्र के लिए	31 मार्च 2024	पूरा किया हुआ सत्रीय कार्य अपने केंद्र के संयोजक के पास जमा करा दें।
जनवरी 2024 सत्र के लिए	30 सितम्बर 2024	

सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ लीजिए।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें :

सत्रीय कार्य करने से पहले ध्यान रखें : सामाजिक विज्ञानों में किसी भी तरह के लेखन के लिए चार सोपान आवश्यक हैं। ये हैं (क) योजना (ख) वस्तु चयन (ग) प्रस्तुतीकरण (घ) व्याख्या

क) योजना : आपसे क्या प्रश्न पूछा गया है और उत्तर में क्या लिखना है। इस पर विचार कीजिए। इकाइयों का ठीक तरह से अध्ययन कीजिए। कुछ अतिरिक्त जानकारी चाहें तो पुस्तकालय का उपयोग कीजिए।

यह देखें कि प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना है या 250 शब्दों में या सिर्फ 100 शब्दों में। बड़े प्रश्नों के लिए विवरणों के साथ व्याख्या भी करनी होगी। तीसरे प्रकार के प्रश्न के उत्तर में संगत विवरणों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

ख) वस्तु चयन : उत्तर देने के लिए आपको सही तथ्यों तथा विवरणों का चयन करना होगा। इसके लिए आप (i) अपनी इकाइयों से नोट्स लें, (ii) तथ्यों को ध्यान से देखें और उत्तर के लिए अनावश्यक विवरण निकाल दें, और (iii) उत्तर का पहला खाका लिख लें। इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि आप उत्तर में क्या सूचनाएं/विवरण प्रस्तुत करना चाहते हैं।

ग) प्रस्तुतीकरण : अब आप उत्तर का दूसरा खाका तैयार करें। इससे आप अपने विचारों को स्पष्टता से व्यक्त कर सकेंगे। आप यह भी जान सकेंगे कि दी गयी शब्द सीमा में आप बात कैसे कह सकते हैं।

उत्तर का तीसरा और अंतिम प्रारूप तैयार कीजिए और देखिए कि आपने सारी आवश्यक बातें अपेक्षित शब्द सीमा में प्रस्तुत की हैं या नहीं।

घ) **व्याख्या** : इतिहास लेखन में व्याख्या की प्रक्रिया का अनन्य स्थान है। आपकी योजना तथा वस्तु चयन में भी व्याख्या की झलक दिखाई देगी। संभवतः, शायद, क्योंकि, इसलिए, आदि शब्दों के साथ आपके वक्तव्य व्याख्या की झलक देते हैं। यहां आपको ध्यान रखना होगा कि आपके तथ्य आपके वक्तव्य का समर्थन करते हैं अथवा नहीं।

टिप्पणी : अगर आपके पास समय सीमित हो तो :

- 1) पहला प्रारूप तैयार करें, उत्तर की संगतता, शब्द सीमा, आदि पर ध्यान दें, और
- 2) अंतिम प्रारूप तैयार करें।

अब आप उत्तर लिखने के लिए तैयार होंगे।

अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

ई.एच.आई.-02

भारत : प्राचीनकाल से आठवीं शताब्दी ईसवी तक

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-02

सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.आई.-02/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2023-2024

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सामने लिखे हैं।

भाग 1: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- 1) प्राचीन भारत में कुछ 'क्षेत्रों' के गठन को समझाइये। 20
अथवा
हड़प्पा सभ्यता की भौतिक विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
- 2) पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्य भारत की ताम्र पाषाण युगीन संस्कृतियों की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 20
अथवा
उत्तरवैदिक कालीन राजनीति और समाज का वर्णन कीजिए।

भाग 2: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

- 3) छठी शताब्दी ई.पू. की भौतिक संस्कृति के विषय में इतिहासकारों ने किस प्रकार पुरातात्विक तथा साहित्यिक स्रोतों को संयोजित किया है। चर्चा कीजिये। 12
अथवा
सोलह महाजनपदों पर एक लेख लिखिए।
- 4) बौद्ध धर्म के विकास के लिए उत्तरदायी कारण क्या थे? 12
अथवा
मौर्य कला की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
- 5) प्रारम्भिक काल में तमिलाहम में राज्य के स्वरूप की व्याख्या कीजिए। 12
अथवा
तमिल भाषा और साहित्य के विकास पर चर्चा कीजिये।
- 6) गुप्त शासकों के अधीन राजनीति तथा समाज व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए। 12
अथवा
उत्तर-गुप्तकाल में सामाजिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन किस प्रकार से अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित थे। समझाइये।

भाग 3: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए : 6+6
- (i) पर्यावरण और मानव बस्तियाँ
(ii) मध्य पाषाण युग
(iii) साहित्य में नगरों और कस्बों के प्रकार
(iv) जैन धर्म के सिद्धांत